International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 250-258

# परसाई साहित्य–पारिवेशिक यथार्थ के विसंगत आयाम

डॉ. मोहन लाल शर्मा*

**प्रस्तावना**

स्वातंत्र्योत्तर व्यंग्य में प्रमुख रूप से सामाजिक और वैयक्तिक दो प्रकार के मानवीय संकटों की अनुगूँज है। कहीं व्यक्ति अपनी निजी तकलीफों, संकटों, हताशा आदि को व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देकर समाज पर आक्रमण करता हुआ विडम्बनाओं की व्याख्या कर रहा है, और कहीं वह समाज की व्यापक विसंगतियों पर प्रहार करके उसकी आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक गाँठों को खोलने की कोशिश कर रहा है।

व्यंग्य बोध की यह कोशिशें स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध गद्य रचनाकारों का चरित्र बन चुकी है। परसाई ने व्यंग्य को व्यंग्य समझकर निबन्धों की सर्जना करने वाले पहले व्यंग्यकार है। इन का व्यंग्य पार्श्व से आघात न कर बिल्कुल आमने–सामने आकर प्रहार करते हैं और युगीन यथार्थ को सही अभिव्यक्ति देते हैं। सामाजिक व्यवस्था और प्रशासन की विसंगतियों को समसामयिक रूप में चित्रित करके परसाई ने एक साहसी लेखक का परिचय दिया है। भाषा की शक्ति और खोखलेपन की भ्रांतियों को तोड़ डालने की क्षमता हिन्दी के लेखक हरिशंकर परसाई में मौजूद हैं। परसाई के व्यंग्य का स्वर न तो हास्य की तरह मीठा होता है और न शेष काव्य की तरह कल्पना प्रसूत होता है। यह सत्य की अभिव्यंजना करता और इसी कारण पाठक या श्रोता के ह्रदय में एक साथ क्रोध, ग्लानि, पश्चाताप और आत्म साक्षात्कार की पीड़ामुलक भावना को जन्म देता है। इनका कड़वापन सीधी गोलीबारी करता है और व्यंजोक्तियों के सहारे जीवन की विकृतियों पर आक्षेप करता है।

**धार्मिक आडम्बरों पर व्यंग्य**

भारतीय संविधान सभी धर्मावलम्बियों को समान मूलभूत अधिकार देता है। सभी धर्मों को एक धरातल पर स्वीकार करने वाली हमारी राज–व्यवस्था स्वयं धर्म–निरपेक्ष है। यह धर्म निरपेक्षता हमारे प्रजातान्त्रिक संगठन का मूलाधार मानी गयी। व्यक्ति को धर्म के क्षेत्र में पूरी आजादी दी गयी, पर समाज सुधार और कल्याण को ध्यान में रखकर धर्म सम्बन्धी कानून बनाने का अधिकार राज्य ने अपने पास ही रख लिया।

देश में होने वाले चुनाव, विभिन्न संस्थाओं और क्लबों का निर्माण इन संस्थाओं की नीति ये सभी स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि उनके पनपने का एक मात्र साधन धर्म के नाम पर व्याप्त साम्प्रदायिकता की भावना ही है। भारतीय राजनीति धर्म और साम्प्रदायिकता का सहारा लेकर ही खेल रही है, इसलिए धर्म के नाम पर धर्मान्धता की प्रवृति समाप्त होने के स्थान पर बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान युग में धर्म पारलौकिक सुख–साध्य का माध्यम नहीं रहा अपितु वह इसी धरती पर प्राप्त स्वार्थ सिद्ध करने के लिए काम में आने वाला हथियार बन गया है।

लोकतन्त्र, व्यक्तिवाद, सामाजिक और आर्थिक न्याय, समाजवाद, राष्ट्रवाद, साम्यवाद आदि वैचारिक पंथो में धर्म का कोई स्थान नहीं है। फिर भी यहाँ धर्म है, धर्म द्वारा समर्थित जाति–व्यवस्था, वर्ण भेद है, तज्जन्य साम्प्रदायिकता है और उस साम्प्रदायिकता को लेकर बुद्धिवादियों में बहस का अभाव भी है।

* भाषा–संपादक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।

आज का धर्म केवल दिखावे मात्र का है। गीता के छोटे–छोटे गुटके, कंधों पर वेदों की जिल्दों का लम्बा चौड़ा गट्ठर, बगल में गंगाजली और मुँह में तुलसी दल, हाथ में माला और मन में चाहे जो कुछ। बस यही कलीयुगी धर्म का सच्चा स्वरूप है। आज के युग में वही व्यक्ति धार्मिक माना जाता है जो बेईमानी द्वारा प्रचुर धनराशि बटोरता हुआ अत्यन्त सुख– सम्पन्न होकर और घमण्डपूर्ण जीवन व्यतीत करता है, परन्तु कभी–कभी साधु–संन्यासियों को बुलाकर कुछ खिला–पिला देता है। ''वैष्णव की फिसलन'' नामक निबन्ध में परसाई जी ऐसे ही ढोंगी धर्म पुरोहितों पर व्यंग्य किया है, जो बहुत ही सटीक, मार्मिक और तीखा है। ''वैष्णव दो घंटे भगवान विष्णु की पूजा करते है, फिर गद्दी – तकिये वाली बैठक में आकर धर्म को धन्धें से जोड़ते हैं। धर्म धन्धे से जुड़ जाय, इसी को 'योग' कहते हैं।'' ''शराब, गोश्त, कैबरें और औरत का व्यवसाय करते हुए भी व्यक्ति अपने को वैष्णव– धर्मी समझता रहता है दूसरों की दृष्टि में अपने को पापी नहीं शुद्धात्मा ही समझता है।[६] प्राचीन समय में भारतवासी धर्म से अत्यधिक भयभीत रहता थाय परन्तु आज भय नाम मात्र के लिए भी उसके अन्दर नहीं। बड़े से बड़े पाप–कर्म मन्दिरों व तीर्थ स्थानों पर नित्य–प्रति होते ही रहते हैं।''

परसाई के समसामयिक जीवन में धर्म की अनैतिकता इतनी विशाल थी कि उस समय सँसार में चार वस्तुओं की ही महिमा थी – जुआ, मदिरा, माँस और पर नारी यही सार सम्पूर्ण धार्मिकता में निवास कर रहा था। धर्म के नाम पर नाजायज बलात, सम्बन्ध स्थापित किये जाते थे। परसाई ने ऐसे व्यक्तियों पर भी घोर प्रहार किया है जो मुफ्त में ही गंगा स्नान करके चले आते है क्योंकि उनके अनुसार ''क्योंकि गंगा पाप विनाशनी है। तमाम पापियों को स्वर्ग भेजती हैं। इस कारण बिना टिकट गंगा स्नान के लिए जाना कोई पाप ही नहीं है, पाप है प्रयाग जाकर भी त्रिवेणी में स्नान किये बिना वापस घर आना।'' 'शव यात्रा का तौलिया' परसाई जी का हिन्दू समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों पर श्रेष्ठ व्यंग्य प्रधान निबन्ध है।

'कन्धे श्रवण कुमार के' नामक निबन्ध में परसाईजी ने प्राचीन मान्यताओं, जो आज के युग में असत्य एंव मिथ्या ही जान पड़ती है, पर बड़ी कुशलता के साथ व्यंग्य किया है। 'गुड़ की चाय' परसाईजी का एक सामाजिक समस्या व्यंग्य प्रधान निबन्ध है लेकिन उसमें भी लेखक ने धर्मनिष्ठ भारतीयों की प्रवृति पर व्यंग्य किया है। व्यक्ति के पास चाहे पेट भर खाने को भी न जुट पाता हो, लेकिन श्राद्ध आदि अनेक प्रकार के साधन जुटाने पड़ते हैं क्योंकि इसे वह पितरों की आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए आवश्यक समझता है। श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मणों को भोजनादि आवश्यक समझा जाता हैं अन्यथा उनके पिण्डों की आत्मा अतृप्तावस्था में ही भटकती रहती है–''एक छोटा आदमी अपने पिता के श्राद्ध के लिए शक्कर की दरख्वात लेकर पहुँचा। वह जानता था कि पिता को स्वर्ग में तभी जगह मिलेगी, जब यहाँ से ब्राह्मण धर्मराज को खबर भेज देंगे कि इसके बेटे ने हम लोगों को लड्डू खिला दिए हैं। वरना शक्कर की मारी आत्मा भटकती रहेगी।'' कितना अन्धविश्वास छाया हुआ है। उत्तरोतर शिक्षादि के प्रचार के फलस्वरूप यद्यपि यह स्थिति अब सुधरती जा रही है लेकिन अभी इसमें पूरी तरह से सुधार नहीं हो पाया है। धर्म के नाम पर छाये भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार को अपने निबन्धों के माध्यम से प्रकट करने में परसाईजी का कोई जवाब नहीं है। ब्राह्मणों पुरोहितों तथा पंडाओं के तत्कालीन यथार्थ चरित्र को प्रकट करना, उनके निर्भीक तथा सत्यदर्शी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है। 'पाखण्ड का आध्यात्म' निबन्ध संग्रह में धर्म की भ्रष्टता देखिए ''भगवानके विरुद्ध कोई कार्यवाहीं नहीं करेगा क्योंकि–60 मार्टिन लुथर ने भगवान से लड़ाई की थी। उसने स्वर्ग में सुख का इन्तजाम करनें के लिए टिकिट लोगों को बेचकर पोप का पैसा नहीं भेजा। मार्टिन लूथर को भी सजा हुई।''

''देश भर में मूर्तियों की चोरी होती है। वें यूरोप और अमेरिका में ले जाकर बेची जाती हैं। तस्करी यह नियमित धंधा है। इसमें धर्म कही नहीं हैं।''

वस्तुतः परसाईजी में धार्मिक व्यंग्य के माध्यम से समाजिक सुधार एवं देशोद्धार के स्वर ध्वनित होते हैं। परसाई जी को इस बात का ज्ञान था कि तत्कालीन समाज का जीवन धर्म–केन्द्रित है, किन्तु धर्म के तत्कालीन अवस्था से असन्तुष्ट थे। पश्चिम से आए ज्ञान के आलोक में उस धर्म में अनेक रूढ़ियाँ तथा अन्धविश्वास मौजूद था। इस प्रकार दोषपूर्ण धर्म को केन्द्र मानकर चलने वालों के जीवन में अनेक प्रकार की विकृतियों का आना

स्वाभाविक था। इन्हीं विसँगतियों और विकृतियों को पहचान कर परसाईजी ने इन पर व्यंग्यात्मक प्रहार किए हैं। वास्तव में इन सभी धार्मिक व्यंग्यात्मकता के पीछे पुनरुत्थान की भावना रही है।

''क्या भगवान भी टांग खींचते हैं ?'' परसाईजी का सशक्त व्यंग्य प्रधान निबन्ध है। इसमें भगवान पर अन्धविश्वास करने वालों पर व्यंग्य किया गया है।

**आर्थिक भ्रष्टाचार**

राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र भारत की आर्थिक नीतियों ने भारत देश को पूरी तरह खोखला कर दिया, अंग्रेजों की आर्थिक विसंगतियों के कारण ही देश के सामने निर्धनता, बेरोजगारी उद्योग धन्धों का अभाव जैसी अनेक समस्या थी, जिनका समाधान ढूँढना आवश्यक था। स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् आर्थिक दृष्टि से देश का विकास करने, समुन्नत बनाने तथा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से समय–समय पर अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम निर्धारित किये गये। व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति की भावना ने देश की राजनीति में व्यापक स्तर पर भ्रष्टाचार को जन्म दिया। अदूरदर्शिता, अकुशलता, फिजूलखर्ची, अपव्यय, रिश्वतखोरी, रिश्वतखोरी, कामचोरी आदि चरम–सीमा पर पहुँचते गये। व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति हेतु देश और जनता के साथ बड़ी से बड़ी गद्दारी की गई। नेतागिरी, अफसरशाही और सेठशाही की मिली–जुली साठ–गांठ ने देश में व्यापक स्तर पर आर्थिक भ्रष्टाचार को जन्म दिया। नेताओं और अफसरों ने सेठों से रिश्वत लेकर अपने–अपने घरों को भरना शुरू कर दिया, दूसरी तरफ टैक्सों की अधिकता, जमाखोरी, मुनाफाखोरी के कारण मंहगाई बढ़ती चली गई। कमर–तोड़ मंहगाई ने आम आदमी के जीवन को दूभर बना दिया, एक तरफ तिजोरियों में धन एकत्र होता गया, दूसरी तरफ सूखी रोटियों के भी लाले पड़ने लगे। जनसंख्या की बेतहासा वृद्धि ने जीवन–जीने के साधनों और बेरोजगारी की समस्या को और भी व्यापक बना दिया।

देश के आर्थिक विकास एवं समुन्नति के लिए योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए करोड़ो रुपये व्यय किये गए। समय–समय पर अन्य अनेक आर्थिक कार्यक्रम और आन्दोलनों की भी घोषणाएँ की गयी, परन्तु इन योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ वर्ग–विशेष के व्यक्तियों तक ही सीमित होकर रह गया व आम जनता तक इनका लाभ नहीं पहुँच सका। बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी घूसखोरी के कारण इन योजनाओं पर व्यय किये जाने वाले धन का आधे से ज्यादा भाग नेताओं, अफसरों तथा दलालों के पेटों में ही समा गया।

भारतीय समाज आर्थिक विसंगति के कारण दो वर्गों में बँट गया है आज धर्म के नाम पर भी आर्थिक शोषण हो रहा है ''मजदूरों का उचित वेतन मांगना खुदा से लड़ाई है। शोषण की शिकायत करना खुदा से लड़ाई है। मुनाफाखोरी का विरोध करना, बैकों और उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की मांग करना, भूमिहीनों का जमीन मांगना, समता की मांग करना, समाजवाद की बात करना सभी काम खुदा से लड़ाई करने के समान है।''

किसानों और गरीबों की समस्याएँ कम होने की बजाए दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। आज भी आर्थिक स्थिति इनती अनिश्चित और भयंकर है कि चारों तरफ आर्थिक विषमता, अराजकता, और भ्रष्टाचार का ही बोलबाला है।

''जनरल जिया ने इस्लामी हुकूमत कायम कर दी। इस्लाम जिन्दाबाद, जनरल जिया– जिन्दाबाद, अब कोई आवश्यकता नहीं आर्थिक सुधारों की, बेकारी मिटाने की, मजदूरी बढ़ाने की, सब अल्ला मिया जन्नत में देंगे।''

भारतीय जनता गरीबी, मँहगाई, अन्याय और आर्थिक शोषण की चक्की में पिसी जा रही हैं यहां की आर्थिक विषमता को बढ़ावा देनें में सार्थक साबित होता जा रहा है। अकाल, महामारी टैक्सों का भार, पूँजीपतियों द्वारा विदेशियों को गेहूँ निर्यात करना तथा करोड़ों रुपयों का मुनाफा कमाना ही यहां के सामन्ति वर्ग का उद्देश्य था। जिसके कारण गरीब जनता गरीब तथा अमीर अधिक अमीर होते चले गये। परसाई जी ने आज के अधिकारी वर्ग की स्वार्थता तथा बेईमानी पर कितना सटीक व्यंग्य अपने निबन्ध अकाल– उत्सव के माध्यम से किया है। वे मानते हैं कि जमाखोर और मुनाफाखोर साल भर अनुष्ठान कराते हैं। स्मगलर महाकाल को नरमुण्ड भेंट करता है। ''इंजीनियर की पत्नी भजन गाती है–प्रभू, कष्ट हरो सबका। भगवन पिछले साल अकाल पड़ा था

तब सक्सेना और राठौर को आपने राहत कार्य दिलवा दिया था। प्रभो, इस साल भी इधर अकाल कर दो और 'इनको' राहत कार्य का इंचार्ज बना दो।''

वेश–भूषा के माध्यम से परसाई जी ने वर्गों का चित्रण किस कुशलता से किया है ''सभ्यता के विकास का क्रम होता है। जब हैण्डलूम पावरलूम, कपड़ा मिल नहीं थी, तब विश्व के हर समाज का ऋषि और शास्ता कम से कम कपड़े पहनता था। तब लंगोटी लगाना या नंगा रहना दुनिया–भर में सन्त का आचार होता था।''

यह फैशन विदेशी कपड़े के प्रयोग की है जो आर्थिक शोषण का कारण बना है। इसी तरह कर्ज के बोझ तले दबाये रखने के लिए करों का भार भी जनता पर अत्यधिक रखते थे। कर के द्वारा प्राप्त किया गया धन का महत्वपूर्ण अंश नौकरशाही की सनक पर खर्च किया जाता था। देश की 'महानिधि' प्रजा के खून पसीने की कमाई को करों द्वारा उगाहने पर परसाईजी ने करारे व्यंग्य किये है। इन करों के माध्यम से ही आर्थिक विषमताएँ अधिक होती चली जाती है। कर के सम्बन्ध में कोई भी हो नेता किसी भी पार्टी का हों पर विरोध नहीं करता है क्योंकि–अगर इस मामले की आलोचना करों, पूंजी वाले नाराज होंगे और अपने वोट कटेंगे। अगर इधर कुछ कहो तो मध्यम वर्ग नाराज होगा और अपने को वोट नहीं देगा। अगर यहाँ कटौती करने की बात करो तो गरीब नाराज होंगी और ज्यादा वोट गरीबों के ही होंगे। इसलिए किसी मामले पर मत बोलो। यही कहो – यह चुनाव बजट है, सबको खुश रखने की कोशिश वाला। परसाईजी मानते हैं कि टैक्स की बीमारी काफी खतरनाक होती है जिसे लग जाएँ वह कहता है–हाय, हम टैक्स से मर रहे हैं परसाईजी ने अपने समाज चिन्तन के द्वारा भंयकर रूप से दहला देनें वाली अर्थ–व्यवस्था धनवान और निर्धन के बीच बढ़ती हुई गरीबी की खाई, अकल्पनीय मंहगाई, बेरोजगारी तथा इन स्थितियों को और भी दारुण बनाती हुई गरीबी, बाढ़, अकाल, महामारी, भूकम्प जैसी विपत्तियों को परसाईजी ने अपनी चेतना के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। युगों से पीड़ित किसानों ओर गरीबों के प्रति इन्होंने सहानुभूति देते हुए अमीरी वर्ग पर खुला व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

**अव्यवस्था सम्बन्धी व्यंग्य**

सरकारी विभागों एवं सेवाओं में अव्यवस्था इतनी फैल चुकी है कि शिक्षा–प्रसार के लिए सरकार ने गाँव–गाँव में पाठशालाध खोल रखी हैं, परन्तु वहाँ अध्यापकों तथा अन्य सामग्री एवम् भवनों का अभाव है अस्पताल खुले हैं, लेकिन यहाँ अभी डॉक्टर कर्मचारी तथा दवाएँ आनी शेष है।

देश का हर व्यक्ति इस अव्यवस्था और भ्रष्टाचार से दुःखी है परन्तु पछतावे के आँसू गिराने के अतिरिक्त उसके पास और कोई रास्ता नहीं है। भारतीय संविधान द्वारा भारत में स्वतन्त्र न्यायपालिका की व्यवस्था की गई है, जिससे प्रत्येक को उचित न्याय प्राप्त हो सके और अपराधी को दण्डित किया जा सके। मूल अधिकारों–वोट देने, आर्थिक समानता, धर्म सम्बन्धी आदि अधिकारों की रक्षा का कार्य न्याय पालिका को ही सौंपा गया। फल इसके विपरीत दिखाई दिया। यहाँ भी गरीब और साधारण व्यक्ति के साथ धोखा हुआ। यहाँ भी मुट्ठी भर पैसे वालों और गुण्डे किस्म के लोगों की विजय हुई। साधारण आदमी को झूठे केस में फँसाकर मुकदमा चलाया जाता है बेचारा न्याय के दरवाजे पर खड़ा इन्तजार करता है, परन्तु उसे न्याय के दर्शन नहीं होते–"कुछ गरीब आदमियों पर झूठा फौजदारी का मुकद्दमा चला दिया गया था। हमने उनकी तरफ से न्याय का दरवाजा खट खटाया। ख्याल था, न्याय दरवाजे के पास ही ड्यूटी पर बैठा रहता होगा। खट–खटाया की बाहर आया। बड़ी देर तक खटखटाने के बाद भी दरवाजा नहीं खुला तो चिन्ता हुई। क्या बात है ? कही न्याय 'सिख लीव' (बीमारी की छुट्टी) पर तो नहीं चला गया ? बूढ़ा हो गया है और अक्सर बीमार हो जाता है।' 'किसी तरह साहस करके वह अन्दर जाता है तो वहाँ उसे न्याय के बदले अन्याय के दर्शन होते हैं– श्आखिर हम दरवाजा तोड़कर भीतर घुस गये। सूनसान था। बाथरूम का दरवाजा खोला, तो नंगा नहाते दिखा।'

''हमने कहा– तुम न्याय हो न। जल्दी कपड़े पहनो। बात करनी है। उसने कहा– मैं न्याय नहीं अन्याय हूँ। नंगा ही रहता हूँ। अन्याय को क्या शर्म, न्याय और मैं जुड़वा भाई हैं। एक सी शक्ल है। लोग उसके धोखे में मुझसे मिल लेते हैं।''

परसाई के अनुसार न्याय काना तो पहले ही था, लेकिन इधर काफी दिनों से बहरा भी हो गया है। झूठ बोलने के लिए न्यायपालिका से ज्यादा उपयुक्त और सुरक्षित दूसरा स्थान नहीं है–"झूठ बोलने के लिए सबसे सुरक्षित जगह अदालत है। वहाँ सुरक्षा के लिए भगवान और न्यायधीश हाजिर होते हैं।''

सरकार ने समाज में व्यवस्था और शान्ति बनाये रखने के उद्देश्य से पुलिस की व्यवस्था की है। पुलिस का कार्य जन–सामान्य के जीवन से लेकर उसकी धन–सम्पति तक की रक्षा करना है। किसी भी समाज में कानून–व्यवस्था, शक्ति और अनुशासन वहाँ के पुलिस विभाग की सतर्कता, कर्तव्य परायणता एवम् ईमानदारी पर निर्भर करती है। परसाईजी ने शान्ति और व्यवस्था कायम रखने के उद्देश्य से पुलिस द्वारा आँसू गैस छोड़ने लाठी चार्ज करने एवं गोली चलाने की निन्दा की है। पुलिस और चोरों की साँठ–गाँठ पर भी परसाईजी ने व्यंग्य किया है– "रात के सन्नाटें में पुलिस की सीटी सुनता हूँ, तो समझ जाता हूँ कि सरकार कह रही है – चोरों, अब हम आ रहे हैं। चोरी कर ली हो तो जल्दी भागो। हम अगर पकड़ लेंगे, तो जेल में डाल देंगे, 20 चोरी हो जाने या डकैती पड़ जाने के काफी देर बाद वहाँ पुलिस पहुँचती है और फिर अधिकारी एवं सिपाही बड़ी मुस्तैदी से जाँच–पड़ताली का ढ़ोगं रचते हैं–"डाकू भाग चुके थे, इसलिए मौके पर पुलिस आ गयी और इत्मीनान से मामले की जाँच करने लगी।''

**राजनीतिक अव्यवस्था पर व्यंग्य**

राजनीतिक क्षेत्र में स्वतन्त्रता के बाद भारतीय राजनीति में जो विसंगतियाँ उत्पन्न हुई है वे व्यंग्य को जन्म देने में कारगार सिद्ध हुई है। जनतन्त्र की उपज विधायकों की बड़ी भीड़ यह घोषणा भी करती है कि विधायक विधाता से कम शक्तिवान नहीं रह गया है क्योंकि उसने तमाम मौसम को बदल दिया है। इन विधायको के कार्य–कलापों करनी और कथनी के अन्तर को परसाई जी ने व्यंग्य का जामा पहना दिया है। ''ये चरणसिंह है अब छः पार्टी मोर्चों में है, जो मँहगाई विरोधी आन्दोलन करेगा। मगर नरेन्द्रसिंह कहते हैं कि यही चरणसिंह शक्कर के घोटाले के लिए जिम्मेदार है। इन्होंने शक्कर मिल मालिकों का पक्ष लिया और गन्ना उत्पादक किसानों को उचित मूल्य नहीं दिया। यही शक्कर के मूल्य के लिए खिलाफ आन्दोलन करेंगे। मगर चरणसिंह इस मोर्चे में रहेंगे ही नहीं।''

हरिशंकर परसाई के निबन्धों में व्यंग्य स्वर प्रधान होने के कारण सर्वप्रथम इस राजनैतिक उथल–पुथल को ही अपना शिकार बनाया था। वर्तमान में व्याप्त राजनेताओं को सम्प्रदाय के नाम पर जाति के नाम पर वोट मिल सकते हैं, मागे जाते है। सम्प्रदायवाद के खिलाफ होते हुए भी साथ मिलकर सरकार बनाइये और जब तब दंगा होये तो कहिये कि संघ ने ही करवाया यह सिद्धान्त का सही आग्रह है। राजनैतिक दांव पेचों और सिद्धान्तहीन दल–बदल ने भी अपना पूरा चमत्कार दिखाया। राजनीति कुटनीति और वोट नीति आदि के पाटों मे निरन्तर पिसती रहने वाली जनता ने उनके प्रति व्यंग्य का भाव उनमें जाग्रत कर दिया था। परसाई का लेखन राजनीति के भेड़ भेड़िये, में उनके चरित्र और उनके विज्ञापित रूप को देश भक्ति का पॉलिस देने वाले लूटेरों का अंकन प्रस्तुत निबन्ध मे किया है। ''हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं उन राजनीतिक दाँवपेचों और सिद्धान्तहीन गुटबन्दियों और प्रचार साधनों का अच्छा मजाक है जिनका प्रयोग खुलकर राजनीति में होता है। मंत्री महोदय 'एक दीक्षान्त भाषण' में देश की नयी पीढ़ी को जो संदेश देता है–"यदि हम वर्तमान नहीं बिगाड़ेंगे, तो आप भविष्य को कैसे बनायेंगे। आपको भविष्य बनाने का मौका देने के लिए ही हम वर्तमान को बिगाड़ रहे हैं। सत्य मुझसे कभी नहीं छूटा किसी भी पार्टी का मंत्रि–मंडल हो, मैं जरूर मंत्री रहा। जिसका मन्त्रिमण्डल बना, मैं उसी का हो गया। सत्य को इसी तरह दाँतों से पकड़ा जाता है।''

परसाई का व्यंग्य लेखन राष्ट्रीय राजनीति को ही निशाना नहीं बनाया बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को भी झकझोरा है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विसंगतियों यथा, कृत्रिम शान्ति–प्रयत्न, गोरों द्वारा कालो पर किये जा रहे अत्याचार, बड़े देशो द्वारा छोटे–छोटे नव विकसित राष्ट्रों को आंतकित करने की कोशिश, निरपराध बच्चों युवकों–युवतियों द्वारा भोगी जाने वाली युद्ध की विभीषिका और शक्ति–परिक्षण के फेर में लाखों–करोड़ों लोगों की मृत्यु आदि दारुण स्थितियों ने कवियों की संवेदनाओं लेखक मनोवृतियों को झकझोर कर रख दिया।

परसाई ने स्वयं स्वीकार किया है। एक बार उनसे चर्चा के दौरान पूँछा गया कि आप इतना राजनैतिक व्यंग्य क्यों लिखते है ?

''इसलिए कि राजनीति बहुत बड़ी निर्णायक शक्ति हो गयी है। वह जीवन से बिलकुल मिली हुई है। वियतनाम की जनता पर बम क्यों बरस रहें हैं ? क्या उस जनता की अपनी कुछ जिम्मेदारी है ? यह राजनीतिक दाँव–पेंच के बम हैं। शहर में अनाज और तेल पर मुनाफाखोरी कम नहीं हो सकती क्योंकि व्यपारियों के क्षेत्रों से अमुक अमुक को चुनकर जाना है। राजनीति सिद्धान्त और व्यवहार की हमारे जीवन का एक अंग है। उससे नफरत करना बेवकूफी है। राजनीति से लेखक को दूर रखने की बात वो ही करते है, जिन के निहित स्वार्थ हैं जो डरते हैं कि कहीं लोग हमें न समझ जायें। मैंने पहले भी कहा है कि राजनीति को नकारना भी एक राजनीति है।

**सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य**

यह पहचान विषय और शैली के स्तर पर परसाई की विशिष्ट उपलब्धि है। हास्य और व्यंग्य की परम्परित वैचारिकता का स्पर्श करने के स्थान पर परसाई ने सामाजिक परिवेश के विद्रूप को अपने लेखन का 'कथ्य' बनाया है। देश की सामाजिक विषमताओं को परसाई जी ने सुधार की दृष्टि से नहीं देखा है। वे परिवेश को बदल डालने के परामर्श दाता है, जो टूटने लायक है, उसे तोड़ डालने के कायल है। परसाई ने स्वयं स्वीकार किया है– ''मैं सुधार के लिए नहीं बदलने के लिए लिखना चाहता हूँ यानी कोशिश करता हूँ। चेतना में हलचल हो जाऐं, कोई विसंगति नजर के सामने आ जाय इतना काफी है।''

वस्तुत व्यंग्य का विषय ऐसा समाज होता है जिसमें मनुष्य रहता है वह शासनतन्त्र होता है, जो उसे राजनैतिक सुरक्षा प्रदान करने का दावा करता है। समाज में रहने वाले लोगों की अपनी–अपनी धार्मिक मान्यताएँ होती है। व्यंग्य स्वयं उस माज को टटोलता है। समाजिक दुर्व्यवस्था, रूढ़ियों एवं कुरीतियों का भण्डा–फोड़ केवल मात्र व्यंग्य ही कर सकता है। और उस व्यंग्य का श्रेय लेखक को जाता है। समाज में प्रचलित ऐसी रूढियाँ जो दिन–प्रतिदिन अधिक सार्थकता की ओर अग्रसर होने वाले जन जीवन को तर्क संगत नहीं लग जाती या सामाजिक मान–मर्यादाओं का ऐसा शिकंजा जो व्यक्ति को न्याय नहीं दे पाता अथवा ऐसी रूढ़ मान्यताओं जिन्हें नई मानवीयता की प्रतिष्ठा के लिए समाप्त हो ही जाना चाहिए, यदि समाज में बनी रहती है तो परसाई जी उनकों विनाश करने की ही दवा देते हैं।

समाज की नग्न कुरीतियों का पर्दाफाश करने में परसाईजी पीछे नहीं है बल्कि वे उन सामाजिक हिताहित की चिंता न करने वाले और स्वार्थ सिद्धि में मग्न समाज–सुधारकों का मजाक उड़ाया है।–विकलांग श्रद्धा का दौर'' में संकलित निबन्ध ''तीसरी आजादी का जाँच कमीशन'' में किस प्रकार नेता अपने ही स्वार्थ में मशगुल है–''मोरारजी– चिन्ता और तनाव उसे हो, जिसने देश की जिम्मेदारी ली हो। मैंने तो कोई जिम्मेदारी नहीं ली। सब ईश्वर पर छोड़ दी। हानि– लाभ जीवन–मरण, जस अपजस विधि हाथ। आदमी के लिए कुछ नहीं होता। लोग भूखे मरते हैं, गरीब हैं, पीड़ित हैं तो यह ईश्वर की इच्छा है। मैं बीच में पड़ने वाला कौन होता हूँ।''

वर्तमान समाजिक परिस्थितयां विकट रूप से जटिल है उन्हें विवेक और समझदारी से ही सुलझाया जा सकता है। मात्र असन्तोष कर देने, निराश हो जाने अथवा कुंठाग्रस्थ हो जानेरू केवल सामाजिक यथार्थ को ग्रहण कर लेने अथवा आशा उल्लास और उद्‌बोधन की गुहार से सन्तोष पा सकना आज के कलाकार के लिए संभव नहीं है। उसे तो युगीन विसंगतियों, बेईमानियों निकृष्ट परम्पराओं, जालसाजियों को समझकर, कुछ इस प्रकार व्यक्त करना था जिससे उनका पर्दाफाश भी हो जाये एवं उसका प्रभाव पाठको की चेतना पर भी पड़े तथा इसी चेतना के माध्यम से युगीन समस्याओं और विडम्बनाओं को दूर करने की ललक पैदा हो। परसाईजी ने व्यंग्य के माध्यम से युगीन करुणा की अभव्यक्ति व्यक्त की है।

नारी की दयनिय स्थिति का अंकन किस सहजता के साथ करते है–''स्त्री से मजाक एक बात है और स्त्री का उपहास दूसरी बात है। स्त्री आर्थिक रूप से गुलाम रही, उसका कोई व्यक्तित्व नहीं बनने दिया गया,

वह अशिक्षित रह, ऐसी रही–तब उसकी हीनता का मजाक करना 'सेफ' हो गया। पत्नी के पक्ष के सब लोग हीन औरी उपहास के पात्र हो गये खासकर साला, सो हर आदमी किसी न किसी का साला होता है।''

'वल्गर है। इतने व्यापक सामाजिक जीवन में इतनी विसंगतियां हैं। उन्हें न देखकर बीबी की मूर्खता का बखान करना बड़ी संकीर्णता है।''

परसाई स्वयं ने कहा है कि मनोरंजन के साथ व्यंग्य में समाज की समीक्षा होती है। तभी तो व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है जीवन की आलोचना करता है।

वास्तव में परसाई का व्यंग्य सामाजिक जीवन के प्रति उतनी ही निष्ठा रखकर चलता है जितनी गम्भीर रचनाकार की बल्कि ज्यादा।

**प्रशासनिक व्यंग्य**

राजनीति और सामाजिक पतन के समानान्तर ही देश लालफीताशाही का भी शिकार हुआ है। अफसरों की मनमानी और प्रभुसत्ता ने प्रशासन को जितना कमजोर बनाया है, उसी के समकक्ष ने देश को खोखला किया जनता के सेवक के स्थान पर नेता और अफसर मालिक हो गए। योजनाओ और प्रशासन कार्यो के बहाने घूस ओर पक्षपात का नंगा नाच देश में हुआ है और परसाई ने अपनी व्यंग्यमयी नजर रूपी छुरी से उनको छीलने का कार्य किया है। आज प्रशासन की आलस्य और घूसखोर की प्रवृति चारों और प्रसिद्ध का सेहरा बांधे हुए है। परसाई जी–"जहरीली शराब'' निबन्ध के माध्यम से देखिए किस तरह इन नेता प्रवृति का चित्र हमारे सामने उतारते हैं–

''हर विधायक जानता है कि उसके क्षेत्र में दारू कहां उतारी जाती है और कौन यह काम करते हैं। हर विधायक और संसद सदस्य जानते है कि इस सड़क पर किस होटल में शराब मिलती है, मगर वे रुकवाते नहीं। पुलिस और आबकारी वाले अगर छापा मारें, तो नेताजी बीच में पड़कर मामला संभाल भी लेते हैं। पुलिस वाले जरुरतमंद को खुद बता देते हैं कि कहां मिल जायेगी''

सब जानते हैं। सब तो खुला है। जाँच करवाने में मजिस्ट्रेटों का समय क्यों नष्ट करते हैं और विधायक दिन–दिन भर विधान सभा में झूठा सात्विक रोष क्यों दिखाते हैं। परिवार नियोजन की तरह इन नेताओं को कुछ 'ढोंग नियोजन' भी तो करना चाहिए।

प्रशासन को भ्रष्टाचार से कही भी नहीं बचाया जा सकता हैं। क्योंकि जिस नींव के उपर मंजिल खड़ी करते है वह स्वयं ही घूसखोर ओर भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं। इसलिए तो परसाईजी "राजनैतिक स्लों पॉयजनिंग में देखिए एक नेता दूसरे नेता की विशेषताओं से किस तरह परिचय करवाते हैं–

''हर नेता दूसरे नेता की धोती खींचता है। कुछ तो शुरु से ही चड्डी पहने हैं। ये नाड़ा खीचते ही नंगे हो जाते हैं। चरणसिंह तो कांतिभाई का नाड़ा खींचकर मोरारजी को नंगा कर रहे हैं। अभी मधु लिमये ने भी नाड़ा खींचा है। उनका कहना है– कांति भाई ने अस्सी लाख, 37 रुपये जनता पार्टी के चुनाव कोष के लिए इकट्ठा किया।''

परसाई ने प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त दुराचार प्रवृतियों को उपर उठाकर समाज के सामने रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज मंत्रियों में अनाचार की प्रवृति कितनी है और उसका भरपूर फायदा हर सदस्य उठाता है चाहे उम्र का तकाजा भले ही उसके इस विचार पर अंकुश लगायें–

"यों राजनीति और स्त्री के मामले बहुत पुराने हैं। बूढ़े होते हुए भी सीजर को फ्लियोपेट्रा ने ऐसा पटायारू कि उसके बेडरूम में रहने लगे। हमारे जमानें में ब्रिटेन के रक्षा मंत्री प्रोफ्युमो को पटाकर विषकन्या क्रिस्टीन कीलर मैकमिलन मंत्रीमंडल को ही चबाये जा रही थी''

आज वस्तुस्थिति विपरीत है। जो योग्य और सक्षम है उन्हें प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं सौपी जाती है। बल्कि अक्षम और अयोग्य अफसरों के हाथ में प्रशासन की लगान हाथ में है। जब चालक ही लगान नहीं पकड़ना जानता है तो वह उस पर सवार जनता को भी अपने साथ–साथ डूबाने का प्रयत्न करेगा। आज

जातिवाद के नाम पर सारा प्रशासन चल रहा है। जब अफसर ही भ्रष्ट एवं पथिक से गुमराह होंगे। तो सामान्य जनता की भलाई का सपना ही साकार नहीं हो सकता है।

वर्तमान देश में अनेक संकटों के बादल देश में चारों और से एक भयंकर प्रलय का रुप धारण करके देश के सुरक्षित भागों को झकझोर देना चाहता है। ये सभी तूफान तभी असर करते है जब प्रशासन स्वयं ही उस देश–द्रोहीयों में सलंग्न पाया जाता है।

समसामयिक सरकारी स्थिति यह है कि हर वर्ष योजनाऐ बनती है और कार्यान्वित नहीं हो पाती है। जो भी कार्यवाही होती है वह मात्र कागजी होती है। किसानों की स्थिति और दयनीय अवस्था को कोई भी सुधारने के लिए कारगार उपाय करने के काई तैयार नहीं है। आज सरकार पूरा काम ही कागज के ऊपर करती है। यहां तक अन्न उगाने के लिए भी जमीन की बजाय कागज खेती प्रारम्भ हो गई है। देखिए सरकारी प्रवक्ता क्या कहते है–''अन्न की पैदावार के लिए किसान की अब जरूरत नहीं है। हम दस लाख एकड़ कागज पर अन्न पैदा कर रहें हैं।''

किसी का किसी पर विश्वास नहीं रह गया है। न व्यक्ति पर न संस्था पर कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका का नंगापन प्रकट हो गया। श्रद्धा कहीं नही रही हैं।

सचमुच परसाई जी का रचना क्षेत्र बहुत व्यापक है। जहां इस देश का सम्पूर्ण समवर्ती इतिहास वातावरण और सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथा प्रशासनिक परिवेश तो उपस्थित है ही, विश्व का प्रत्येक राजनैतिक सामाजिक और उसके भीतर कार्यशील विभिन्न शक्तियों के घात–प्रतिघात मौजूद है, जहां वे विश्व के सम्पूर्ण मानवीय चेतना के साथ एकाकार हो जाते है। विश्व का एक भी नेता या राष्ट्रनायक ऐसा नहीं है, जिसने मानवीय संघर्ष को बढ़ाने या कमजोर करने में अपनी भूमिका निभायी हों, और परसाई की दृष्टि के सामने न आया हो।

परसाई के लेखन मात्र विवरण मूलक चित्रण नहीं है अपितु कलात्मक चित्रांकन है, जहाँ इनसे सम्बन्धित व्यक्तित्व और शक्तियाँ अपनी चरित्रगत वर्गीय विशिष्टताओं के साथ रचना के भीतर आकार ग्रहण करती हैं रचनाकर की व्यंग्यात्मक सामर्थ्य के माध्यम से पात्र बनती हैं, और अन्ततरू पाठक की इनसे सम्बन्धित समझ विस्तृत होती है।

भारतीय समाज का आन्तरिक आदर्श लगातार पथभ्रष्ट और विषमतर स्थिति में डूबता गया है। इस अद्योगति के लिए केवल राजनीति ही नहीं सारा समाज उत्तरदायी है। विभिन्न सामाजिक स्तरों पर जो विकृतियाँ पीछा नहीं छोड़ रही है उन से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है। समाज की विद्रूपताएं व्यक्ति और परिवेश के स्तर पर रही है।''

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. वैष्णव की फिसलन–ह.श.प. पृ. 8–9
2. पगडण्डियों का जमान–ह.श.प. पृ. 19
3. शिकायत मुझे भी है–ह.श.प. पृ. 53
4. पाखण्ड का अध्यात्म–ह.श.प. पृ. (1982)
5. कहत कबीर ह. श. प.–पृ. 14 (1988)
6. अपनी–अपनी बीमारी–ह.श.प. पृ. 28
7. कहत कबीर ह.श. प. पृ. 71 (1988)
8. पाखण्ड का अध्यात्म–हरिशंकर परसाई पृ. 38
9. वैष्णव की फिसलन–ह.श.प.–पृ. 16 9182
10. शिकायत मुझे भी है–ह.श. प. पृ. 56 (1970)

11. वैष्णव की फिसलन–ह.श.प.–पृ. 15 (1982)
12. वैष्णव की फिसलन–ह.श.प.
13. शिकायत मुझे भी है–ह.श.प.–
14. वैष्णव की फिसलन ह.श. प.–पृ. 99 1982
15. पाखण्ड का अध्यात्म ह.श. प.–पृ. 99 1982
16. शिकायत मुझे भी ह. श. प. पृ. 46 1970
17. पाखण्ड का अध्यात्म ह.श. प. पृ. 41 1988
18. विकलांग श्रद्धा का दौर–ह.श. प. पृ. 96
19. सदाचार का ताबीज–ह.श.प. ( कैफियत ) पृ. 11 (1967)
20. विकलांग श्रद्धा का दौर ह. श. प. पू. 100
21. विकलांग श्रद्धा का दौर ह. श. प. पृ. 121 1980
22. सदाचार का ताबीज–ह.श.प. पृ. 128 (1967)
23. पाखण्ड का अध्यात्म–ह. श. प. पृ. 61
24. कैफियत सदाचार का ताबीज ह.श. प. पृ. 10
25. पाखण्ड का अध्यात्म–ह. श. प. पृ. 35 9188
26. विकलांग श्रद्धा का दौर ह. श. प. पृ. 113 1980
27. पाखण्ड का अध्यात्म ह.श.प.–पृ. 89